स्त्री चिंतन

संपादक
मुदनर दत्ता सर्जेराव
डाकोरे कल्याणी लिंगुराम

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-81-8111-275-0

© : सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक : **गोविन्द पचौरी**
जवाहर पुस्तकालय
हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक
सदर बाजार, मथुरा-281001 (उ.प्र.)
दूरभाष : 09897000951
ई-मेल : jawahar.pustakalaya@gmail.com

मूल्य : 225.00 (दो सौ पच्चीस रुपये मात्र)

प्रथम संस्करण : 2016

आवरण : विनीत शर्मा

शब्द-संयोजन : गीता डिजाइनिंग ग्रुप, दिल्ली-110094
मो. : 09350345268, फोन : 011-22813053

मुद्रक : जय भारत प्रेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिक

'क' खण्ड

1. 'साहित्य में स्त्रीवाद : सिद्धान्त और सृजन'
   -प्रो. एस.ए. सूर्यनारायण वर्मा 09
2. 'भूमण्डीकरण और स्त्री के प्रश्न'
   - रूपरेखा वर्मा 13
3. 'समकालीन प्रवासी महिला लेखन की बानगी है 'इतर'
   - रमेश तिवारी 21
4. विज्ञापन का मनोविज्ञान-'नारी और समाज'
   - हरदीप कौर 29
5. स्त्री साहित्यकारों की जुबानी साहित्य में नारी स्थिति
   - जेबा रशीद 34

'ख' खण्ड

1. 'कथा साहित्य में स्त्री का स्वरूप'
   - पूजा सक्सेना 40
2. 'वर्तमान समय में हिंदी स्त्री कथा-साहित्य'
   -अंबरीष कुमार तिवारी 44
3. स्त्री उपन्यासकारों के उपन्यासों में परिवर्तित स्त्री-जीवन मूल्य'
   -उत्तम राजाराम आळतेकर 49
4. इक्कीसवीं सदी की स्त्री उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श
   -गंगा लिंबाजीराव गायके 56
5. 'नारी विमर्श से मुखातिब होते उपन्यास'
   -पी. रवि 60
6. स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में 'शेष यात्रा' का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन
   -संदीप श्रीराम पाईकराव 66

Scanned by CamScanner

नारी विमर्श से मुखातिब होते उपन्यास

डॉ. पी. रवि

"नारीवादी लेखन को आज के विश्व परिवेश, पूँजी की नानाविध जटिल गतियों, उपभोक्ता संस्कृति के नए रूपों और इतिहास विकास के पूरे प्रवाह में अवस्थित करके समझना होगा और उस भावी समाज की संभावनाओं एवं रूपरेखा पर भी सोचना होगा, जिसमें स्त्री एक सम्पूर्ण मनुष्य का समान दर्जा पा सकेगी। नारीवादी लेखन तभी एक सक्रिय सामाजिक चिंतन और वैज्ञानिक दृष्टि से लैस हो सकेगा और अनुभववाद तथा अमूर्त निठल्ले अकादमिक मश्कत के भटकावों से मुक्त होगा।"

यहाँ नारीवाद पर विशद चर्चा करना नहीं, उसको संबोधित करते, उससे संवाद करते उपन्यासों पर चर्चा करने का प्रयास है। उपन्यासकार किस तरह नारी विमर्श का संबोधन करते हैं और कैसे अपने विचारो को पात्रो, प्रसंगो तथा अन्य उपकरणों द्वारा प्रस्तुत करते हैं, इस दौरान कौन-सी कमियाँ आ गई हैं उन सब पर विचार करना इस लेख का उद्देश है। नारी-विमर्श को संबोधित करते उपन्यासकारों में उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी और कृष्णा सोबती पहले आती हैं। उषा प्रियंवदा नारी अस्मिता संघर्ष के प्रयाण को अपने प्रथम तीन उपन्यासों के जरिए प्रस्तुत करती है। 'पचपन खंभे लाल दीवारे' पहला उपन्यास है जिससे उच्चशिक्षा प्राप्त कॉलेज अध्यापिका सुषमा की बंधन से मुक्ति की छटपटाहट का चित्र है। अपने बारे में खुद निर्णय लेने में असमर्थ सुषमा में स्वतंत्र की चाह प्रबल है। इस तरह का कठिन मानसिक संघर्ष वह झेलती रहती है। इसके अगले चरण के रूप में वे 'रुकोगी नहीं राधिका' लिखती हैं। राधिका उसकी प्रमुख पात्र है। अपने में सिमटकर मुक्ति की तलाश करती राधिका पाश्चात्य पत्रकार डैन से, याने पाश्यात्य संपर्क से तथा पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त करने पर मुक्त होने लगती है। वह अपने मन की कहती है, करती है। सूरजमुखी के चित्र के बल पर वह पारिवारिक, सामाजिक बंधनों एवं फरियादों को ठुकराती है। पिता, विमाता व मित्रों से वह खुलकर अपनी बातें करने लगती है। सीधे वह मनीश

Scanned by CamScanner